E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

महाभारत में राजधर्म एवं मानव कल्याण की राजनैतिक एवं सामाजिक प्रासंगिकता

डॉ. मधु राजपूत
विषय संस्कृत
एम.ए. पीएच. डी

Paper Rcevied date

05/11/2025

Paper date Publishing Date

10/11/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17925996

IMPACT FACTOR
5.924

शोध सार

महाभारत प्राचीन भारतीय राजनीति और राजनीतिक विचारों के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। महाभारत के शान्ति पर्व में राजशास्त्र, राजधर्म (राजाओं के कर्तव्य), शामन, मंत्रिपरिषद और कराधान के बारे में कई महत्वपूर्ण विचार शामिल हैं। शांति पर्व में राजा के कर्तव्यों और शासन के विभिन्न कार्यों का वर्णन है जो राजवंश के महत्व का वर्णन करता है। राजवंश की उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित करता है ।

महाभारत में शान्ति पर्व के अलावा सभा पर्व के पांचवें अध्याय में आदर्श राज्य व्यवस्था के स्वरूप का वर्णन किया गया है। आदिपर्व का अध्याय 142 भी राजकीय कार्यों के निष्पादन हेतु कूटनीति का समर्थन करता है। बेनी प्रसाद के अनुसार, महाभारत एक प्रकार का ज्ञान का विश्वकोश है, जिसमें धर्म, नीति, राजनीति आदि पर विभिन्न एवं विरोधी विचारों का मिश्रण है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन का पूरे विश्व में महत्वपूर्ण स्थान है।

मुख्य बिन्दु :- शामन, मंत्रिपरिषद, महत्वपूर्ण, निष्पादन, कूटनीति ।

प्राचीन भारतीय विचारकों ने धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार किया। हजारों साल बाद भी इन भारतीय विचारकों के विचार राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक मार्गदर्शक के रूप में काम करते हैं।

वह मानव जगत का सर्वोच्च आकांक्षी आध्यात्मिक क्षेत्र हो, चाहे वह सामाजिक जगत हो, चाहे वह व्यवहारिक एवं सामाजिक क्षेत्र हो, चाहे वह ऐतिहासिक क्षेत्र हो अथवा आम जनता के प्रत्यक्ष कल्याण एवं कर्तव्य को निर्देशित करने वाला राजनीतिक क्षेत्र है। राजा के प्रति प्रजा का स्पष्ट होना चाहिए। दूसरों के प्रति कर्तव्य आदि विषयों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित सभी तत्व संपूर्ण महाभारत में यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं । ग्रंथ में इसका स्पष्ट उल्लेख है-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

धर्म चार्च च कामे च मोक्षे न भरतर्षभ ।

बरिहास्ति तदन्यत्र यत्नेहास्ति न तत् कृषित ॥ (1)

राजधर्म का अर्थ राजधर्म शब्द दो शब्दों राजा और धर्म से मिलकर बना है। राजधर्म का शाब्दिक अर्थ है राजा का धर्म । राजधर्म छटा पुरुष एकवचन यौगिक है, जिसका अर्थ राजा का धर्म है। धर्म शब्द और कर्तव्य शब्द का अर्थ है कि हम धर्म को कर्तव्य के रूप में स्वीकार करते हैं। हालांकि प्राचीन काल में आधुनिक शासन व्यवस्था यानि लोकतंत्र का अभाव था । राजशाही एक ऐसी शासन प्रणाली थी जहाँ शासन प्रणाली की सर्वोच्चता राजा के पास होती थी ।

राजा संप्रभु होता था और सरकार की सारी शक्तियों उसी में निहित होती थी। राज्य के अन्य अधिकारी राजा के सहायक की भूमिका में होते थे, अर्थात् राज्य की विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका की शक्तियाँ राजा में निहित होती थी तथा राजा ही मुखिया होता है। राज्य के तीन अंग हालाँकि राज्य की सभी सीमाऐं शासन में निहित है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि राजा निरंकुश था। राजा की जीवन शैली धर्म के अनुसार व्यवस्थित होना चाहिए।

यदि राजा मुर्ख हो तो उसे पदच्युत किया जा सकता है या मृत्युदंड भी दिया जा सकता है। इग प्रकार राजा का पद जिम्मेदारी से भरा हो और अत्याचार के लिए कोई जगह नहीं हो। राज्य को सुचारु संचालन को सुनिश्चित करने के लिए राजधर्म को भी धर्म के अंतर्गत शामिल कर दिया गया, जो बाद में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गया। यदि राजधर्म का ठीक से पालन किया जाए तो राजा को इस जीवन और परलोक दोनों में लाभ मिलेगा। महाभारत के शान्ति पर्व में युधिष्ठिर भीष्म अपने पितामह से पूछते हैं-

राकां है परमो धर्म इति धर्मविवो विदुः ।

महात्मेतं भारं च मन्ये तद् ब्रूहि पार्थिव ।। (2)

अर्थात् हे पिता, धर्मज्ञों का धर्म ही राजाओं में सर्वोत्तम है और यह राजधर्म बड़ा भारी है. अतः आप मुझे राजधर्म समझाइऐ राजधर्म संपूर्ण जीव जगत का आधार है, राजधर्म में धर्म, अर्थ और काम तीनों शामिल हैं। इतना ही नहीं, संसार को मर्यादा में रखने का प्राथमिक साधन पूर्ण मुक्ति का धर्म है, तो पहले मेरे लिए राजधर्म को राजधर्म कहो ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राजधर्मान् विशेषेण कवयस्य पितामह ।

सर्वस्य जीवसोकस्य राजधर्मः परावणम् ।। (3)

युधिष्ठिर के उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में पितामह भीष्म ने कहा-

बादावेव कुरुषेष्ठ राजा रज्जनकाम्यया ।

बठानां द्विजानां वर्तितम्यं यथाविधि । । (4)

राजा को सबसे पहले प्रजा का आदर करना चाहिए अर्थात उन्हें प्रसन्न रखने की इच्छा रखनी चाहिए। देवताओं और ब्राह्मणों की उचित रीति से पूजा और सत्कार करना चाहिए। हमेशा प्रयास करें कुछ करने की लेनी चाहिए, बिना प्रयास के ही भाग्य मिलता है।

राजाओं का प्रयोजन पूरा नहीं कर सकते है । हालोंकि कार्रवाई में दृढ़ संकल्प और प्रयास दोनों शामिल हैं, कारण भले ही साधारण लगे, पर मैं प्रयास को ही मुख्य कारण मानता हूँ। नियति पहले से ही निर्धारित है प्रयास करना राजाओं की सर्वोत्तम नीति है, इतना ही नहीं बल्कि तीन चीजें ताकत, सलाह, कार्यकुशलता, संलग्नता और संयम के अनुरूप कार्य उठाना चाहिए ।

महाभारत के शान्तिपर्व के प्रमुख राजनीतिक विचार इस प्रकार हैं राज्य की उत्पत्ति के विषय में कोई निश्चित सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किया गया है। शान्ति पर्व के एक स्थान पर कहा गया है, मानव समाज की रचना के बाद लंबे समय तक मुख और शांति थी, लोग स्वाभाविक रूप में धर्म का पालन करते थे और राज्य और कानूनों के बिना शांति में रहते है।

धीरे-धीरे मनुष्य का पतन होने लगा। लोग नैतिक रूप से भी पतित हो जाते हैं और मनुष्य की व्यसन वृद्धि के कारण वेद आदि नष्ट होने लगे तनाव आदि धार्मिक अनुष्ठान भी कम होने लगे। इसमें भयभीत होकर देवतागण ब्रह्माजी के पास गये और उन्हें अपनी दुर्दशा बतायी। यह सब सुनकर, राजा ने धर्म, अर्थ और काम का विवरण देते हुए एक पंच की रचना की और कहा कि यह युक्ति, जो मनुष्य की रक्षा करती है, तो वह सभी जीवित प्राणियों को नियंत्रित करने वाली दुनिया में प्रबल हो जाएगी। वे दुनिया अंधकार में बनी है। इस कारण यह नीति दंडात्मक नीति के नाम में जानी जायेगी ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इस विस्तृत प्रावधान के बाद जनता ने भी उसके शासन में रहना स्वीकार कर लिया। लेकिन विरज, भार और नवरम के पुत्र नगम्बी बने रहे और उन्होंने राजा के कर्तव्यों पर कोई ध्यान नहीं दिया। बाद में उसी पीढ़ी पृथु का जन्म हुआ। वे एक वैदिक विद्वान, मार्शल आर्ट और नीतिशास्त्र में पारंगत थे । (5)

उसे पृथ्वी का राजा बनाया गया, इस प्रकार राजा का जन्म हुआ क्योंकि सारी प्रजा उसके प्रति समर्पित थी। उन्हें क्षत्रिय भी कहा जाता था क्योंकि उन्होंने ब्राह्मणों की रक्षा की थी । पृथु ने धर्मपूर्वक (पृथ्वी) को आशीर्वाद दिया, यह भूमि पृथ्वी के नाम में विख्यात हुई है । शान्ति पर्व के 67वें अध्याय में राज्य की उत्पत्ति का जो वर्णन मिलता है, उससे पता चलता है कि प्रारंभ में मनुष्यों के बीच एक संधि थी ।

राजधर्म :

राजधर्म का आधार वेद, गणस्मृति, उपनिषद्, ब्राह्मण, ग्रंथ, अरण्यक आदि वैदिक ग्रंथ हैं। राजधर्म को सभी तत्वों का सार कहा गया है। राजधर्म के बिना देश की उन्नति न हो पाती, प्रारंभ में यहाँ कोई राजा या दण्ड-प्रणाली नहीं थी, जिसके फलस्वरूप राज्य बन गये। साथ ही राजधर्म की पूर्ण रक्षा के लिए महर्षि मनु ने मनुस्मृति की रचना कर सभी लोगों की भावनाओं को एकत्रित करने का महान कार्य किया। बहुत न्याय व्यवस्था पर महर्षि मनु ने राजधर्म पर भी अपने सशक्त विचार प्रस्तुक किये ।

राजा के गुणः भीष्मजी कहते हैं कि दया और उदारतावाला राजा अच्छे कार्यों की ओर अग्रसर होता है। आगे बढ़ना चाहिए लेकिन कड़वाहट नहीं आने देनी चाहिए। आस्तिक रहते हुए दूसरों से प्रेम करना न छोड़े। क्रूरता का सहारा लिए बिना धन एकत्रित करें। सीमाओं का उल्लंघन करते हुए तीन चीजों का आनंद ले। कृपालु हुए बिना प्रेमपूर्ण भाषण दें। महान बनो लेक बहुत जोरदार मत बनो। लेकिन अयोग्य नहीं । बहादुर बनो लेकिन दयाहीन नहीं बुरे लोगों की संगति न करे और मित्रों में झगड़ा न करें, जो व्यक्ति राजनीतिज्ञ नहीं है उसे जासूस के साथ काम नहीं करना चाहिए । बिना किसी को कष्ट पहुंचाए अपना काम करें। दुष्टों को यह मत बताओ कि तुम क्या चाहते हो। अपने गुणों का स्वयं व्याख्या न करें। अमीरों को कभी भी गरीबों का धन नहीं छीनना चाहिए ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सामाजिक विकास :

हमारे देश के लोगों को सामाजिक न्याय का प्रावधान संविधान में ही निहित है। सदियों पुरानी गरीबी और भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के कारण पिछड़े समुदायों के कमजोर वर्गों को सामाजिक अन्याय का शिकार होना पड़ता है।

अगर हम सामाजिक विकास की बात करें तो जाति-पाति एवं ऊंच-नीच बिल्कुल नहीं देखना चाहिए। आज के समाज में कुछ स्थानों पर जाति निर्णय बहुत दुर्लभ है। हमारे देश के कई हिस्सों में ऊंची जाति के लोग निचली जाति के लोगों को हेय दृष्टि से देखते हैं ।

अगर हम समाज का विकास करना चाहते हैं, तो इन देशों को निर्णय से मुक्त होना होगा और मानव जाति के हित में बिना भेदभाव के आगे बढ़ना होगा। तभी समाज का विकास होगा। ऋग्वेद सूक्त की परिभाषा में कहा गया है संग ध्वांग सं बध्वांग सं बो मनांगमि कहलिम | पूजा करना । अर्थात, एक साथ चलें, एक स्वर में बोलें, अपने दिमागों को एकजुट होने दें, जैसे प्राचीन देवता बलिदान में भाग लेने के लिए सहमत हुए थे।

अंत में मैं कह सकता हूं कि शासन, प्रशासन और राजनीतिक जीवन, शिक्षा आदि में पिछड़ी जातियों का प्रतिनिधित्व कम है जिसे राष्ट्रीय धारा का हिस्सा बनाकर दूर किया जा सकता है और उन्हें प्रतिनिधित्व देकर विकास में आगे बढ़ाया जा सकता है। एक समाजवादी समाज सभी के साथ सद्भाव से बन और विकसित हो सकता है। ये लोग समाज में सम्मान के साथ रह सकें, सबके बीच ऊंचे स्थान पर खड़े रह सकें और समाज में समानता कायम रहे, इसके लिए आवश्यक कदम उठाना जरूरी है ।

संदर्भ सूची

1. **शास्त्री राजबीर आचार्य, विशुद्ध मनुस्मृति सन्** 1981 **सन्** 1981 **प्रकाशक, प्रकाशक, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट स्वारी बावली अ**. 1 **श्लोक** 1.
2. **रस्वती दयानन्द स्वामी ऋग्वेद माध्यम रान 2005 प्रकाशक विश्व मानव ऊधान परिषद पूर्वी दिल्ली म. 3 शुक्त 38 मन्त्र ।**
3. **कुमार सुरेन्द्र प्रोफेसर, विशुद्ध मनुस्मृति सन् 1906 प्रकाशक आर्य साहित्य प्रत्यार ट्रस्ट खारी अध्याय 7 बायली, दिल्ली ।**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

4. शास्त्री राजबीर आचार्य मनुस्मृति सन् 1981 प्रकाशक आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी वायली, दिल्ली अ. 7 शखोक 541.
5. शास्त्री राजबीर आचार्य, विशुद्ध मनुस्मृति सन् 1981 सन् 1981 प्रकाशक, प्रकाशक, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट खारी बावली अध्याय 7 श्लोक. 64 पुक्र 262.